DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
PERSONALITY:TRAIT APPROACH
LECTURE-39

CONTRIBUTION OF CATTELL

कैट्टेल का योगदान

शीलगुण सिद्धांत में आलपोर्ट के बाद कैट्टेल का नाम अधिक महत्वपूर्ण माना गया है |इन्होने शीलगुण सिद्धांत में अपना विशेष योगदान करके इस सिद्धांत को व्यक्तित्व की व्याख्या करने में काफी प्रबल बनाया है |

कैट्टेल ने प्रमुख शीलगुणो की खोज की शुरुआत आलपोर्ट द्वारा बतलाये गए 18000 शीलगुणो में से 4500 शीलगुणो को चुन कर किया | बाद में इनमे से समानार्थ शब्दों को एक साथ मिला कर इसकी संख्या उन्होंने 200 कर दी और फिर बाद में विशेष सांख्यिकीय विधि यानी कारक विश्लेषण के सहारे अंतर सह सम्बन्ध द्वारा उसकी संख्या 35 कर दी |

कैट्टेल ने शीलगुणो को कई ढंग से विभाजित कर अध्ययन किया है | उनका सबसे मशहूर वर्गीकरण वह है जिसमे उन्होंने व्यक्तित्व के शीलगुणो को सतही शीलगुण तथा मूल या स्रोत शीलगुण के रूप में विभाजन किया |

इन दोनों का वर्णन निम्नांकित है –

(I) सतही शीलगुण (SURFACE TRAIT)- इस तरह का शीलगुण व्यक्तित्व के उपरी सतह या परिधि पर होता है यानी इस तरह के शीलगुण ऐसे होते है जो व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तः क्रिया में आसानी से अभिव्यक्त हो जाते है |इसकी अभिव्यक्ति इतनी स्पष्ट होती है की सम्बंधित शीलगुण के बारे में व्यक्ति में कोई दो मत हो ही नहीं सकते है | जैसे प्रसन्नता ,परोपकारिता,सत्यनिष्ठा कुछ ऐसे शीलगुण जो सतही शीलगुण के उदाहरण है जिनकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में स्पष्ट रूप से होती है |

(II) स्रोत या मूल शीलगुण (SOURCE TRAIT)-कैट्टेल के अनुसार मूल शीलगुण व्यक्तित्व की अधिक महत्वपूर्ण संरचना है तथा इसकी संख्या सतही शीलगुण की अपेक्षा कम होती है | मूल शीलगुण सतही शीलगुण के सामान व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में

स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हो पाते है |अतः इसका प्रेक्षण सीधे नहीं किया जा सकता है |कैट्टेल के अनुसार मूल शीलगुण व्यक्तित्व की भीतरी संरचना होती है जिसके बारे में हमें ज्ञान तब होता है जब हम उससे सम्बंधित सतही शीलगुण को एक साथ मिलाने की कोशिश करते है |जैसे सामुदायिकता,निस्वार्थता तथा हास्य तीन ऐसे सतही शीलगुण है जिनके एक साथ मिलाने से एक नया मूल शीलगुण बनता है जिसे मित्रता कहा गया है |इस उदाहरण से यह स्पष्ट है की मूल शीलगुण के अभीव्यक्ति सतही शीलगुण के रूप में होती है इसलिए कैट्टेल ने सतही शीलगुण को 'शीलगुण सूचक' भी कहा है |कैट्टेल के अनुसार 23 मूल शीलगुण ऐसे है जो सामान्य व्यक्तियों में पाए जाते है तथा 12 ऐसे मूल शीलगुण है जो असामान्य व्यक्तियों में पाए जाते है |

सामान्य रूप से मूल शीलगुण को दो भागों में बांटा है- पर्यावरण-प्रभावित शीलगुण तथा स्वाभाविक शीलगुण| कुछ मूल शीलगुण ऐसे होते है जिनके विकास में अनुवांशिकता की अपेक्षा वातावरण-सम्बन्धी कारको का अधिक प्रभाव पड़ता है |उन्हें पर्यावरण –प्रभावित शीलगुण कहते है कुछ शीलगुण ऐसे होते है जिनके विकास में वातावरण की अपेक्षा अनुवांशिकता का

प्रभाव अधिक पड़ता है | इस तरह के शीलगुण को स्वाभाविक शीलगुण कहा जाता है |

कैट्टेल ने शीलगुणो का विभाजन उस व्यवहार पर भी किया है जिससे वे सम्बंधित होते है | इस कसौटी के आधार पर शीलगुण के तीन प्रकार है –गत्यात्मक शीलगुण,क्षमता शीलगुण,तथा चित्तप्रकृति शीलगुण

कैट्टेल ने यह भी बतलाया है की व्यक्तित्व के शीलगुणो का अध्ययन करने के लिए मुख्यतः तीन श्रेणी है –जीवन अभिलेख,आत्म रेटिंग तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षण | पहले शोध से प्राप्त आँकड़े को L-DATA दुसरे स्रोत से प्राप्त आँकड़े को Q-DATA तथा तीसरे स्रोत से प्राप्त आँकड़े को O-T-DATA कहा जाता है |

आलापोर्ट तथा कैट्टेल के योगदानों का अध्ययन करने से एक प्रश्न सामने आता है की मानव व्यक्तित्व के प्रमुख शीलगुण कौन –कौन से है |इस विषय पर कई मनोवैज्ञानिक ने शोध किए है जिनमें से कोस्टा एवं मैकक्रे (1994),होगान (1983),मैकक्रे नौलर (1994),लॉ एवं कोमरे (1987) इन शोधकर्त्ताओं के बीच लगभग इस बात कि सहमती है कि व्यक्तित्व के निम्नांकित पाँच महत्वपूर्ण तथा ह्रस्ट –पुष्ट विमाएँ है जो सभी bipolar है –

(i) वहिर्मुखता – व्यक्तित्व का यह एक ऐसा विमा है जिसमे एक परिस्थिति में व्यक्ति सामाजिक,मजाकिया,स्नेहपूर्ण,वातूनी आदि का शील गुण दिखाता है तो दूसरी परिस्थिति में वह संयमी,गंभीर ,रूखापन,शांत,सचेत रहने आदि का शील गुण भी दिखाता है |

(ii) सहमतिजन्यता –इस विमा के भी दो छोड़ या ध्रुव बतलाये गए है |इस विमा के अनुसार व्यक्ति एक परिस्थिति में सहयोग,दुसरो पर विश्वास करने वाला ,उदार ,सीधा-साधा, उत्तम प्रकृति आदि से संबंद्ध व्यवहार दिखाता है तो दूसरी परिस्थति में वह असहयोगी ,शंकालु ,चिड़-चिड़ा,जिद्दी,बेरहम आदि बनकर भी व्यवहार करता पाया जाता है |

(iii) कर्त्तव्यनिष्ठा – इस विमा में एक परिस्थिति में व्यक्ति विचार कर व्यवहार करने में सम्बद्ध शीलगुण दिखलाता है तो दूसरी परिस्थिति में वह व्यक्ति बिना-सोचे समझे ,असावधानीपूर्वक ,कमजोड़ या आधे मन से भी व्यवहार करने से सम्बद्ध शीलगुण दिखलाता है|

(iv) स्नायुविकृति – इस विमा में व्यक्ति एक ओर कभी-कभी तो सम्वेगिक रूप से काफी शांत ,संतुलित,रोग भ्रमी विचारों से अपने आप को मुक्त पाता है तो

दूसरी ओर वह कभी-कभी अपने आप को सम्वेगिक रूप से काफी उत्तेजित ,असंतुलित तथा रोगभ्रमी विचारों से घिरा हुआ पाता है |

(v) अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति – इस विमा से कभी-कभी व्यक्ति एक तरफ काफी संवेदनशील,काल्पनिक,बौद्धिक ,भद्र आदि व्यवहार से संबंद्ध शीलगुण दिखाता है तो दूसरी ओर वह काफी असंवेदनशील ,रुखा,संकीर्ण,असभ्य एवं अशिष्ट व्यवहारों से सम्बद्ध शीलगुण भी दिखलाता है |यद्दपि शीलगुण सिद्धांत 'प्रकार सिद्धांत'से अधिक वैज्ञानिक एवं पूर्ण लगता है फिर भी मनोवैज्ञानिको ने भी इसकी कुछ आलोचनाये की है जो निम्नांकित है –

(i) शीलगुण सिद्धांत में कारक विश्लेषण कर शीलगुण सिद्धांतवादी शीलगुणो की कोई एक निश्चित संख्या निर्धारित करने में अब तक असमर्थ रहे है |

(ii) शीलगुण सिद्धांतवादियों द्वारा बतलाये गए प्रमुख शीलगुण की संख्या के बारे में असहमति तो है ही ,साथ-ही-साथ ऐसे शीलगुण एक-दुसरे से पूर्णतः स्पष्ट ,भिन्न एवं स्वतंत्र नहीं है |

(iii) शीलगुण सिद्धांत में परिस्थितिजन्य कारकों के महत्व को स्वीकार नहीं किया गया है |

(iv) शीलगुण उपागम का स्वरूप वर्णनात्मक है |

(v) शीलगुण सिद्धांत व्यक्तित्व में परिवर्तन की व्याख्या करने में भी सक्षम नहीं है | शीलगुण सिद्धांत से यह पता नहीं चलता है की व्यक्तित्व में परिवर्तन किस तरह आता है |

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद व्यक्तित्व का शीलगुण उपागम एक महत्वपूर्ण उपागम है जिसके माध्यम से व्यक्तित्व के स्वरूप को समझने की कोशिश की गयी है |